Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

हिमाचल प्रदेश की मंगलामुखी जाति का संगीत के क्षेत्र में योगदान

DR. MRIUNJAY SHARMA[1] AND MANOJ KUMAR[2]

[1]Assistant Professor, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Shimla

[2]Ph.D. Research Scholar, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Shimla

सार संक्षेपिका

मंगलामुखी जाति का संगीत से गहरा संबंध है। मंगल+मुख इन दो शब्दों के मिलने से मंगलामुखी शब्द बना है जिसका अर्थ है मंगल की तरफ मुखवाला अर्थात् मंगलकार्यों में जिनका योगदान रहता है। समाज में होने वाले प्रत्येक मांगलिक कार्यों में जिनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है उन्हें मंगलामुखी कहा जाता है। मंगलामुखी जाति और गन्धर्वों का संगीत के साथ ही संबंध रहा है। गन्धर्व और मंगलामुखियों का जिस भी ग्रंथ में वर्णन मिलता है, वहां उन्हें संगीतज्ञ के रूप में ही वर्णित किया गया है। हर युग में इनका प्रमुख कार्य संगीत ही रहा है। मंगलामुखी जाति के लोगों का हिमाचल की संस्कृति और सभ्यता में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। मंगलामुखी जाति के कलाकारों में गायक, वादक और नृतक ये तीन वर्ग आते हैं। रामायण और महाभारत काल से लेकर आज तक देवी–देवताओं से संबंधित जितने भी कार्य रहे हो उन सभी कार्यों में मंगलामुखी जाति का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। हिमाचल प्रदेश के सभी मंदिरों में सुबह शाम पूजा पाठ इत्यादि कार्य होते हैं। पूजा पाठ के समय मंगलामुखी जाति के कलाकारों द्वारा विभिन्न प्रकार की देवतालों का वादन किया जाता है जब तक इन देवतालों का वादन नहीं होता तब तक देवी देवताओं की पूजा को पूर्ण नहीं माना जाता है। हिमाचल प्रदेश में अनेक प्रकार के मेले त्यौहार सामाजिक संस्कार शादी विवाह आदि कार्य होते हैं ये सभी कार्य मंगलामुखी जाति के बिना सम्पन्न नहीं माने जाते। मंगलामुखी जाति के गायकों व वादकों का मानव मात्र के कल्याण एवं सुख–समृद्धि की मंगल कामना का घर द्वार तक प्रसारित करने में अपूर्व योगदान रहा है। इस जाति के कलाकारों द्वारा प्रत्येक वर्ष ''महिना गायन, बारहमासा गायन, चैत्र गायन'' भी किया जाता है और समाज में इसी जाति के कलाकारों को इन सभी विधाओं को गाने बजाने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है। लोक संगीत एवं वाद्य का यदि दार्शनिक अध्ययन किया जाए तो मंगलामुखी जाति के लोगों द्वारा ही इसका मूर्त रूप मुखरित होता है। हमारा प्राचीन लोक संगीत कैसा था, लोक संगीत को कैसे गाया बजाया जाता था ये सारी जानकारी मंगलामुखी जाति के कलाकारों के पास आज भी उपलब्ध है। मंगलामुखी जाति द्वारा प्रयुक्त वाद्यों में ढोल, नगाड़ा, शहनाई, करनाल, रणसिंगाा आदि प्रमुख है। गायन में विशेष उत्सवों पर शहनाई और ढोल व वाद्य यन्त्रों पर वृन्दवादन भी पेश करते हैं जिसे स्थानीय भाषा में ''नौबत'' कहते है। आधुनिक समय में हमारी युवा पीढ़ी, हमारा समाज पाश्चात्य संगीत की तरफ आकर्षित होता जा रहा है तथा अपनी लोक संस्कृति, लोक संगीत, हमारी पौराणिक विधा को खोता जा रहा है परन्तु ऐसे समय में आज भी मंगलामुखी जाति के लोग हमारी पुरानी सभ्यता और संस्कृति को संजोए हुए है और इन सभी विधाओं को सुरक्षित रखने में समाज को बहुत बड़ा योगदान दे रहे है।

भूमिका

कलाएं पांच प्रकार की होती है संगीत कला, चित्रकला, मूर्तिकला, काव्यकला और भवन निर्माण कला इन कलाओं में संगीत उच्च कोटी की कला है क्योंकि इसकी उत्पत्ति का माध्यम नाद (आवाज) है जो कि अति सूक्ष्म है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक संगीत की उत्पत्ति और विकास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि संगीत का भविष्य अत्यन्त उज्जवल था और है। संगीत के विकास में अनेक प्रकार की बाधाएं सामने आई है परन्तु फिर भी संगीत विकसित हुआ और वर्तमान में और अधिक विकसित हो रहा है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

वैदिक काल से लेकर संगीत का मनुष्य के जीवन के साथ अटूट संबंध रहा है। कोई भी मनुष्य संगीत से घृणा करे अगर इससे दूर रहने की सोचे तो यह असंभव है, क्योंकि ध्वनि और नाद का सीधा संबंध हमारे हृदय और मन से है। संगीत एक अत्यन्त प्रभावशाली और भावनात्मक कला है, जिसका मानव जीवन पर अत्यन्त प्रभाव पड़ता है। वर्तमान काल में संगीत एक महत्त्वपूर्ण विषय बन गया है। प्रत्येक व्यक्ति की संगीत में विशेष रूचि है और वह संगीत को सीखने और जानने का भी भरसक प्रयत्न करता है। एक समय था जब संगीत और संगीतकार दोनों को निकृष्ट दृष्टि से देखा जाता था, किन्तु आज के समय में संगीत कला ने वृहद् रूप धारण कर लिया है। कोई भी मनुष्य संगीत के नियमों से भले ही परिचित न हो लेकिन अपने लोक संगीत से अनभिज्ञ नहीं रहता क्योंकि यह जन साधारण व उनके संस्कारों में व्याप्त है। यही कारण है कि यह इतना प्रभावशाली और महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक काल में संगीत सीमित न होकर सार्वभौमिक हो गया है। प्रत्येक व्यक्ति संगीत से जुड़ना चाहता है।

मंगलामुखी जाति का परिचय

मंगलामुखी जाति का संगीत से गहरा संबंध है। मंगल+मुख इन दो शब्दों के मिलने से मंगलामुखी शब्द बना है जिसका अर्थ है मंगल की तरफ मुखवाला अर्थात् मंगलकार्यों में जिनका योगदान रहता है। समाज में होने वाले प्रत्येक मांगलिक कार्यों में जिनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है उन्हें मंगलामुखी कहा जाता है। इनकी उत्पत्ति के बारे में विष्णुपुराण में उल्लेख मिलता है कि इनकी ''उत्पत्ति ब्रह्मा जी से हुई है। सर्वप्रथम ब्रह्मा जी की जंघा से असुर की उत्पत्ति हुई, क्योंकि उस समय तमोगुण की अधिकता थी तत्पश्चात् उन्होंने तमोमात्रात्मक शरीर को त्याग दिया, उस त्यागे हुए शरीर से रात्रि काल का आविर्भाव हुआ, तब उन्होंने पुनः शरीर धारण कर सृष्टि की कामना की और उनके मुख से सत्व प्रधान देवगण उत्पन्न हुए।'' पितरों की रचना हुई, प्राणियों की सृष्टि हुई उसी समय उनके शरीर से गन्धर्वों की उत्पत्ति हुई ''वे गो (वाणी) तथा धयन (उच्चारण) करते हुए उत्पन्न हुए इसलिए गन्धर्व कहलाये'' और ये भी कहा जाता है कि ''जब ब्रह्मा जी ने स्वयंभुव को प्रजा उत्पन्न करने का आदेश दिया तो उस समय सर्वप्रथम दक्ष जी ने ऋषि गन्धर्व, असुर और सर्पादि को मानसी प्रवृति से उत्पन्न किया।'' मंगलामुखी जाति और गन्धर्वों का संगीत के साथ ही संबंध रहा है। गन्धर्व और मंगलामुखियों का जिस भी ग्रंथ में वर्णन मिलता है, वहां उन्हें संगीतज्ञ के रूप में ही वर्णित किया गया है। हर युग में इनका प्रमुख कार्य संगीत ही रहा है। कहा जाता है कि गन्धर्वों में हाहा और हुहु

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

नामक गन्धर्व हुए जो ब्रह्मा जी के निकट दिव्य गान किया करते थे। विष्णु पुराण में गन्धर्व, सर्प, राक्षस, अप्सरा आदि की स्थिति एवं कार्यों का वर्णन किया गया है, इनमें अप्सरायें नृत्य का कार्य करती थी और गन्धर्व यशोगान किया करते थे। गन्धर्व इन्द्र की सभा के गायक भी थे और देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए गन्धर्व यशोगान किया करते थे, मंगलाचरण करते थे और अप्सरायें नृत्य करती थी।1

प्रेम सागर में उल्लेख आता है कि जब श्री कृष्ण का जन्म हुआ तो ब्रह्मा जी के आदेश से सुर, मुनि, किन्नर और गन्धर्व सब अपनी स्त्रियों सहित ब्रजमण्डल में आए तथा गन्धर्व ढोल, दमामें, भेरी बजाकर गुणगान करने लगे। प्रेम सागर में इन्हें मंगलामुखी के नाम से भी पुकारा गया है हर मंगल कार्यों में मंगलामुखियों का वर्णन किया गया है, चाहे वह विवाह संबंधी कार्य हो या पुत्र जन्म हो या पूजा–पाठ यज्ञ इत्यादि।2

श्रीमदभागवत महापुराण में मंगलामुखियों और गन्धर्वों का वर्णन इस प्रकार से मिलता है :

दिव्यवाघान्त तूर्याथ्ण पेनुः कुसुमवृष्टयः।

मनुयस्तुरूटुवुस्तुष्टा जगुगन्धिर्व किन्नराः।।

अर्थात् आकाश में मांगलिक बाजे बजने लगे देवी–देवता फूलों की वर्षा करने लगे मुनि प्रसन्न होकर स्तुति करने लगे गन्धर्व और किन्नर गाने बजाने लगे और अप्सरायें नाचने लगी।

श्रीमद्भागवत महापुराण में वर्णन मिलता है कि जब महाराजा युधिष्टिर को यह समाचार मिला की भगवान श्री कृष्ण पधार गये हैं तब उनका रोम–रोम आनन्द से खिल उठा, वे अपने आचार्यों और स्वजन सम्बन्धियों के साथ भगवान का स्वागत करने के लिए नगर से बाहर आए, मंगलगीत गाए जाने लगे, बाजे बजने लगे, ब्राह्मण मिलकर ऊंचे स्वरों में वेद मंत्रों का उच्चारण करने लगे और गन्धर्व भगवान श्री कृष्ण को प्रसन्न करने के लिए मृदंग, शंख, नगाड़े, वीणा, ढोल और नरसिंगे बजा–बजाकर नाचने गाने लगे।3

1 श्री विष्णु पुराण, पृष्ठ संख्या 28, 29, 82

2 प्रेम सागर, पृष्ठ संख्या 16

3 श्रीमद्भागवत महापुराण, पृष्ठ संख्या 410

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

हिमाचल में विभिन्न जातियों के लोग निवास करते है। इन जातियों में मंगलामुखी तूरी जाति के लोग भी आते है। हिमाचल प्रदेश में यह जाति बहुत प्राचीन समय से निवास करती आ रही है। हिमाचल प्रदेश में इस जाति को अलग–अलग नामों से जाना जाता है, जैसे मंगलामुखी तूरी, गन्धर्व, हेसी, ढाकी आदि।

शोध कार्य के उद्देश्य

मंगलामुखी जाति का हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत में योगदान।

शोध क्षेत्र

प्रस्तुत शोध का कार्य क्षेत्र हिमाचल प्रदेश की मंगलामुखी जाति से संबंधित था।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य को क्रियान्वित करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

मंगलामुखी जाति का संगीत के क्षेत्र में योगदान

मंगलामुखी जाति के लोगों का हिमाचल की संस्कृति और सभ्यता में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। मंगलामुखी जाति के कलाकारों में गायक, वादक और नृतक ये तीन वर्ग आते हैं। हिमाचल प्रदेश को देवभूमि कहकर भी पुकारा जाता है क्योंकि यहां के हर क्षेत्र में देवी–देवता निवास करते हैं। रामायण और महाभारत काल से लेकर आज तक देवी–देवताओं से संबंधित जितने भी कार्य रहे हो उन सभी कार्यों में मंगलामुखी जाति का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। हिमाचल प्रदेश के सभी मंदिरों में सुबह शाम पूजा पाठ इत्यादि कार्य होते हैं। पूजा पाठ के समय मंगलामुखी जाति के कलाकारों द्वारा विभिन्न प्रकार की देवतालों का वादन किया जाता है जब तक इन देवतालों का वादन नहीं होता तब तक देवी देवताओं की पूजा को पूर्ण नहीं माना जाता है। हिमाचल प्रदेश में जब भी देवताओं की देव यात्राएं निकाली जाती हैं तो उनके अभिनन्दन या स्वागत में मंगलामुखी जाति के कलाकारों द्वारा देव वाद्यों का वादन किया जाता है। जब देवी देवता प्रस्थान करते हैं तो मंगलामुखी जाति के कलाकार आगे–आगे चलकर देव वाद्यों का वादन करते हैं तथा मंगलाचरण करते हैं। हिमाचल प्रदेश में अनेक प्रकार के मेले त्यौहार सामाजिक संस्कार शादी विवाह आदि कार्य होते हैं ये सभी कार्य मंगलामुखी जाति के बिना सम्पन्न नहीं माने जाते।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

मंगलामुखी जाति द्वारा प्रयुक्त होने वाले वाद्य यंत्र।

मंगलामुखी जाति के गायकों व वादकों का मानव मात्र के कल्याण एवं सुख–समृद्धि की मंगल कामना का घर द्वार तक प्रसारित करने में अपूर्व योगदान रहा है। इस जाति के कलाकारों द्वारा प्रत्येक वर्ष ''महिना गायन, बारहमासा गायन, चैत्र गायन'' भी किया जाता है और समाज में इसी जाति के कलाकारों को इन सभी विधाओं को गाने बजाने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है। इसी जाति के कलाकारों द्वारा इसे शुभ व मंगलकारी माना जाता है। आधुनिक समय में युवा पीढ़ी अपनी लोक संस्कृति, लोक सभ्यता और लोक संगीत को भूलती जा रही है और पाश्चात्य संगीत की तरफ आकर्षित होती जा रही है परन्तु ऐसे समय में आज भी मंगलामुखी जाति के लोग अपनी संस्कृति और सभ्यता को संजोए हुए हैं।

लोक संगीत एवं वाद्य का यदि दार्शनिक अध्ययन किया जाए तो मंगलामुखी जाति के लोगों द्वारा ही इसका मूर्त रूप मुखरित होता है। आज भी इस जाति के कलाकारों के पास लोक

संगीत के हर क्षेत्र हर विद्या की महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध है। हमारा प्राचीन लोक संगीत कैसा था, लोक संगीत को कैसे गाया बजाया जाता था ये सारी जानकारी मंगलामुखी जाति के कलाकारों के पास आज भी उपलब्ध है। आज भी मंगलामुखी जाति के व्योवृद्ध कलाकारों के पास प्राचीन लोक तालों का भण्डार भरा पड़ा है जिसकी जानकारी होना हमारे लोक संगीत लोक संस्कृति और सभ्यता को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक है। आधुनिक समय में ये सारी विद्याएं लुप्त होती जा रही हैं इन विधाओं को संजोए रखने के लिए इस जाति पर कार्य अति आवश्यक था ताकि हमारी लोक संस्कृति और लोक सभ्यता को विकसित किया जा सके।

इसी सन्दर्भ में शोधार्थी ने एक साक्षात्कार में पाया कि मंगलामुखी जाति का हमारी संस्कृति और सभ्यता में बहुत बड़ा योगदान है। इस जाति द्वारा बहुत सारे वाद्य यंत्रों का वादन किया जाता है जैसे ढोल, नगाड़ा, शहनाई, करनाल, हरनसींगा आदि। इस जाति का संस्कृति में ही नहीं अपितु हिमाचल प्रदेश में जितने भी देवालय है वहां पर ये जाति निवास करती है और सभी देव कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है।[1]

समाज में होने वाले प्रत्येक संस्कार मंगलामुखी जाति के बिना सम्पन्न नहीं माने जाते चाहे वह जन्म संस्कार हो या शादी विवाह। विवाह संस्कार मनुष्य के जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण है। विवाह सर्वाधिक मंगल और उत्साह का अवसर माना जाता है। विवाह संस्कार से सम्बन्धित जितने भी गीत होते हे जैसे तेल गीत, बटणा गीत, सेहरा बन्दी गीत, विदाई गीत ये प्रायः मंगलामुखी लोगों द्वारा ही गाए जाते है। मंगलामुखी जाति के कलाकार ही इनका मुख्य स्रोत माने जाते है।[2]

उपसंहार

शास्त्रीय संगीत मानव मन का संपदन है। यह मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम साधन है। इस कला के अन्तर्गत, गायन, वादन तथा नृत्य का समावेश है ये तीनो कलायें अन्योन्याक्षित होते हुए भी स्वतंत्र रूप से विकसित हुई है।

1 साक्षात्कार अशोक भारद्वाज सुपुत्र श्री सीताराम, गांव जणोग, जिला शिमला

2 साक्षात्कार, बसन्ती देवी सुपुत्री सरिया राम, गांव छैला (देवठी भुंई), जिला शिमला

प्रस्तुत शोध का विषय हिमाचल प्रदेश से सम्बन्धित है। प्रस्तुत शोध में हिमाचल प्रदेश की संस्कृति को सम्मुख रखा गया है तथा मंगलामुखी जाति के लोगों का लोकसंगीत में योगदान को ही विषयान्तर्गत लिया गया है। मंगलामुखी जाति द्वारा प्रयुक्त वाद्यों में ढोल, नगाड़ा, शहनाई, करनाल, रणसिंगाा आदि प्रमुख है। गायन में विशेष उत्सवों पर शहनाई और ढोल व वाद्य यन्त्रों पर वृन्दवादन भी पेश करते हैं जिसे स्थानीय भाषा में ''नौबत'' कहते है। इस क्षेत्र के मंगलामुखियों के संगीत में यहां की संस्कृति के साक्षात दर्शन होते है। इनका संगीत लोगों के हर्षोल्लास, सुख–दुःख परस्पर मैत्री भाव धार्मिक मान्यताओं से परिपूर्ण है। लोक संगीत एवं लोक वाद्यों का यदि दार्शनिक अध्ययन किया जाए तो इस क्षेत्र में मंगलामुखी जाति के लोगों द्वारा ही इसका मूर्त रूप मुखरित होता है। आधुनिक समय में हमारी युवा पीढ़ी, हमारा समाज पाश्चात्य संगीत की तरफ आकर्षित होता जा रहा है तथा अपनी लोक संस्कृति, लोक संगीत, हमारी पौराणिक विधा को खोता जा रहा है परन्तु ऐसे समय में आज भी मंगलामुखी जाति के लोग हमारी पुरानी सभ्यता और संस्कृति को संजोए हुए है और इन सभी विधाओं को सुरक्षित रखने में समाज को बहुत बड़ा योगदान दे रहे है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

श्री विष्णु पुराण (1987) अनुवादक श्री मार्कण्डेय जी 'यदुवंशी' महामाया पब्लिकेशनज टांडा जालन्धर

शिवमहापुराण (1996) महामाया पब्लिकेशनज जालन्धर

प्रेमसागर (1866) कविकुलभूषण पंडित लल्लूलजीकृत गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास लक्ष्मीवेंकटेश्वर, छापखाना, कल्याण (जिला ठाना)

श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्वत 2072) चौरासीवां पुनर्मुद्रण (प्रथम खण्ड) गीता प्रेस, गोरखपुर

श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्वत 2072) पचासीवां पुनर्मुद्रण (द्वितीय खण्ड) गीता प्रेस, गोरखपुर

साक्षात्कार

अशोक भारद्वाज सुपुत्र श्री सीताराम, गांव जणोग, जिला शिमला

बसन्ती देवी सुपुत्री श्री सरिया राम, गांव छेला (देवठी भुंई) जिला शिमला